गांधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन
(सन्दर्भ–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़)

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा से चित्रकला में
पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा
2017

शोध निर्देशिका

डॉ० सोनिका

असिस्टेंट प्रोफेसर,
ड्राईंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,
कला संकाय,
डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग, आगरा

शोध छात्रा

रूबी राठौर

ड्राईंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,
कला संकाय,
डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग, आगरा

विभागाध्यक्ष व संकाय प्रमुख

प्रो० रागिनी रॉय
ड्राईंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय,
डी. ई. आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा

गांधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन
(सन्दर्भ–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़)

शोध–संरचना

- शोध संकल्पना 1–2
- सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन 2–3
- परिकल्पना 3
- उद्देश्य 4
- चर 4
- कार्य प्रणाली 4–5
    - अनुसन्धान अभिकल्प
    - प्रदत्त संकलन
        - प्राथमिक स्त्रोत
        - द्वितीयक स्त्रोत
    - प्रतिदर्श आकार
    - साक्षात्कार
    - सीमायें
- निष्कर्ष 5
- आधुनिक युग में अध्ययन की प्रासंगिकता 5

गांधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन (सन्दर्भ–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़)

शोध संकल्पना

मानव सभ्यता के आरम्भ से ही कला मानवीय अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत करने का माध्यम रही है। मनुष्य ही ऐसा जीव है जिसे कला के माध्यम से अपने आन्तरिक कौतूहल को मूर्तरूप देने की क्षमता प्राप्त है समय के साथ–साथ कला का स्वरूप धीरे–धीरे विकसित होता गया जो आगे चलकर अनेक रूपों जैसे चित्रकला, मूर्तिकला व स्थापत्य कला आदि के रूप में विकसित हुआ।

मूर्तिकला मानव चेतना का चैतन्य रूप प्रदर्शित करती है। भारतीय उप–महाद्वीप में मूर्तिकला का विकास सैन्धव सभ्यता से ही दिखाई देता है। इसका दक्ष रूप इसमें धार्मिक प्रतीकों का समावेश करने के बाद ही उभरा। धार्मिक प्रतीक कुछ मान्य आदर्शों के अनुसार निर्मित किये जाते हैं, जिन्हें हम सामान्य तौर पर समानुपातिक रीति कहते हैं। मूर्ति निर्माण परम्परा में बौद्ध धर्म पहला संस्थागत धर्म था, जिसने इस तरह की रीतियों के आधार पर अपने दैवी आदर्शों को लोक आस्था के लिये निर्मित किया। गांधार व मथुरा में पहली सदी के आस–पास भारत में धार्मिक मूर्तिशिल्प, विशेष रूप से बौद्ध मूर्तिशिल्प व्यापक रूप से निर्मित करना प्रारम्भ किया गया था। इन दोनों कला केन्द्रों में बौद्ध मूर्तियाँ अपनी सामाजिक–धार्मिक पृष्ठभूमि से जुड़ी रही। भारत में मूर्तिकला की ध्वजवाहक इन दोनों शैलियों की विशेषता इसी कारण सीमित रही।

इस समय गांधार व मथुरा शैली की बुद्ध व बोधिसत्व मूर्तियाँ उन परम्परागत शिल्पकारों के सम्मुख आदर्श रूप में लायी गयी, जो महाजनपद काल से ही अपनी तक्षण एवं काष्ठ शिल्पकला के लिए विख्यात हैं। गांधार कालीन मूर्तिकारों ने बौद्ध मूर्तियों के माध्यम से कला और आध्यात्म की ऐसी संगति प्रस्तुत की, जो अपने जीवन्त एवं सुकोमल रूप में शास्त्रीय कहलायी। इन्हीं कला शैलियों में निर्मित मूर्तिशिल्पों से प्रभावित होकर, मैंने अपने शोध का विषय 'गांधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन (सन्दर्भ– राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़)' के रूप में चयनित किया।

गांधार शैली एक प्रसिद्ध प्राचीन भारतीय मूर्तिशिल्प शैली है। सामान्यतः गांधार शैली की मूर्तियों का समय पहली शती से चौथी शती ईसवी के मध्य का है। गांधार शैली भारतीय शैली रही है परन्तु इस कला शैली पर ग्रीक व रोमन आदि शैलियों का प्रभाव दिखाई देता है क्योंकि गांधार प्रदेश में भारतीय, ग्रीक–रोमन, मध्य एशिया व ईरानी संस्कृतियों का सम्मिलन था। इसलिए गांधार शैली के इन मूर्तिशिल्पों पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव दिखायी देता है।

गांधार शैली को ग्रीको–रोमन, ग्रीको बुद्धिस्त या हिन्दू यूनानी भी कहा जाता है। इन गांधार कालीन मूर्तिशिल्पों की संरचना ग्रीक देवताओं जैसे–अपोलो आदि की तरह की थी, किन्तु विषय पूर्ण रूप से भारतीय बौद्ध धर्म पर आधारित रहे। यह गांधार मूर्तिशिल्प विशेष रूप से काले स्लेटी पत्थर से निर्मित कर उनमें प्रेम, करुणा, वात्सल्य आदि भावों को व अलंकरण को पूर्ण रूप से संजोया गया है।

बौद्ध धर्म से सम्बन्धित गांधार शैली की मूर्तियाँ आज भी अनेक संग्रहालयों में संग्रहीत है। ऐसा ही एक प्रमुख सग्रहालय चण्डीगढ़ का राजकीय संग्रहालय है।

यह संग्रहालय भारत के विभाजन के दौरान ही लाहौर संग्रहालय से स्थानान्तरित कर चण्डीगढ़ में स्थापित किया गया। चण्डीगढ़ में स्थित राजकीय संग्रहालय और कला वोथिका स्वय में एक भव्य स्मारक है। प्रख्यात फ्रांसीसी वास्तुविद ले कॉबूजियर ने इस भवन की रूप रचना एक संग्रहालय के रूप में की। तत्कालीन चीफ कमिश्नर स्वर्गीय डॉक्टर मोहिन्दर सिंह रन्धावा के सतत् प्रयासों से 6 मई सन् 1968 में यह संग्रहालय अस्तित्व में आया, जिसका भ्रमण करने के बाद मैंने इसके महत्वपूण कला संग्रह को जाना। यहाँ पर गांधार कालीन मूर्तिशिल्पों का एक विशाल संग्रह है, जिसने मुझे अत्यधिक आकर्षित किया और इन मूर्तिशिल्पों के आधार पर ही, मैंने अपने शोध का विषय 'गांधार कालीन मूर्तिशिल्पों का अध्ययन (सन्दर्भ–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़)' के रूप में चयनित किया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन विषय के सम्बन्ध में वास्तविक तथ्य व जानकारी एकत्र करने में सहायता प्रदान करता है। अतः अपने शोध विषय 'गांधार कालीन

मूर्तिशिल्प का अध्ययन (सन्दर्भ–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़)' के सन्दर्भ में मैंने अनेक पुस्तकों का गहन अनुशीलन किया, जिनमें कि '**मीनाक्षी कासलीवाल**' की पुस्तक **'भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला'** से मुझे प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त हुआ। **'वासुदेव उपाध्याय'** द्वारा लिखित **''प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान''** नामक पुस्तक से गांधार शैली की उत्पत्ति तथा उसकी भौगोलिक, सांस्कृतिकएवं धार्मिक स्थिति का परिचय मिला। 'John Marshall' की पुस्तक ***"The Buddhist art of Gandhara"*** से गांधार कालीन मूर्तिशिल्पों की कलात्मक विशेषता की पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। 'Shantilal Nagar' द्वारा लिखित ***'Buddha in Gandhara (and other Buddhist Sites)'*** नामक पुस्तक से मुझे गांधार शैली के अनेक पक्षों का ज्ञान प्राप्त हुआ। '**पद्मश्री प्रभाशंकर आ0 सोमपुरा**' की पुस्तक **''भारतीय शिल्पसंहिता''** से मूर्तिशिल्पों में प्रयुक्त लक्षण व तालमान के महत्व को जाना। इन पुस्तकों और अन्य सभी स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर मैं गांधार मूर्तिशिल्प के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सास्कृतिक व धार्मिक पक्षों का अनुशीलन करने का प्रयास करूँगी। साथ ही इन मूर्तिशिल्पों का रूपात्मक एवं शिल्प शास्त्रोय विश्लेषण तथा मथुरा मूर्तिशिल्प से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

परिकल्पना

किसी शोध कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व शोधार्थी को शोध कार्य में सफलता हेतु शोध की परिकल्पना तैयार करना अति आवश्यक होता है। परिकल्पना शोधार्थी के संज्ञान को पुष्ट करती हुयी नयी विचार चेतना भी प्रदान करती है।साथ ही यह शोधार्थी को अपने शोध की दिशा में स्पष्ट रूप से निर्देशित करती है, जिससे वह अपने शोध के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। शोधार्थी अपने शोध के माध्यम से भारतीय मूर्तिशिल्प कला में गांधार शैली के महत्व, योगदान और विशिष्टता को सबके समक्ष प्रस्तुत करना चाहती है। शोधार्थी गांधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़ के सन्दर्भ में करेगी और गांधार मूर्तिशिल्प के कलात्मक महत्व को सबके समक्ष प्रकट करने का सफल प्रयास करेगी।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य के विषय 'गाधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन (सन्दर्भ–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़)' के सम्बन्ध में शोधकार्य के उद्देश्य निम्न हैं–

- राजकीय संग्रहालय चण्डीगढ़ में संग्रहीत गांधार कालीन मूर्तिशिल्पों के विशाल संग्रह को प्रकाश में लाना।
- गांधार शैली की उत्पत्ति, विकास एवं उसके भौगोलिक विस्तार का अध्ययन करना।
- गांधार कालीन मूर्तिशिल्पों के सौन्दर्यात्मक पक्षों का विश्लेषण करत हुए उनकी शैलीगत विशेषताओं को स्पष्ट करना।
- गांधार मूर्तिशिल्प एवं मथुरा मूर्तिशिल्प का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए भारतीय मूर्तिशिल्प कला में गांधार शैली के महत्त्व एवं योगदान को स्थापित करना।

चर

- गांधार कालीन मूर्तिशिल्प– राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़ व उनके छायाचित्र।
- संग्रहालय के प्रबन्धक एवं सहायक।
- कला समीक्षक।
- पुस्तकें, प्रकाशित पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, कैटलॉग, इंटरनेट वेबसाइट्स।

कार्य प्रणाली

- **अनुसन्धान अभिकल्प**

  यह शोध राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़मे संग्रहीत गांधार कालीन मूर्तिशिल्प के आधार पर वर्णनात्मक अनुसन्धान प्रणाली में प्रस्तुत किया जायेगा।

- **प्रदत्त संकलन**

  प्राथमिक स्त्रोत– राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़ में संगहीत गांधार कालीन मूर्तिशिल्प।

द्वितीयक स्त्रोत– पुस्तकें, प्रकाशित पत्र–पत्रिकाए, समाचार पत्र, कैटलॉग, इंटरनेट वेबसाइट्स, साक्षात्कार, संग्रहालयों में भ्रमण आदि।

- **प्रतिदर्श आकार**– गांधार कालीन मूर्तिशिल्प संग्रह–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़ के लगभग 150 छाया चित्र।

सीमायें

किसी भी शोध कार्य समय सीमा को ध्यान में रखत हुए पूर्ण करना होता है, इसलिए मैंने समय सीमा को देखते हुये अपने शोध कार्य को सीमित करने का प्रयास किया है। मैं भारतीय म्र्तिशिल्प कला में केवल गांधार शैली का अध्ययन करूँगी। यह अध्ययन मैं केवल राजकीय संग्रहालय, चण्ड़ीगढ़ के सन्दर्भ में प्रस्तुत करूँगी।

निष्कर्ष

गांधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि पाश्चात्य प्रभाव दर्शाती यह शैली अपनी आत्मा से पूर्णरूपेण भारतीय है। हमारी यह प्राचीन धरोहर तत्कालीन कलात्मक संस्कृति की सजीवता और सौन्दर्यात्मकता की परिचायक है। इस विलक्षण संग्रह को स्वयं में समेटे हुये चण्डीगढ़ का राजकीय संग्रहालय आज भी दर्शकों को उस महान कला संस्कृति से परिचित करा रहा है और अपनी स्थापना के उद्देश्य को सफल बना रहा है।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता

संग्रहालयों में सहेजी गई हमारी प्राचीन धरोहरें हमारी उन्नत संस्कृति की परिचायक है। इन संग्रहालयों के भमण द्वारा वर्तमान में भी अनेक दर्शक तत्कालीन उत्कृष्ट कलाकृतियों का रसास्वादन कर सकते हैं व अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गौरान्वित हो सकते हैं। राजकीय संग्रहालय, चण्डोगढ़ में संग्रहीत गांधार मूर्तिशिल्प भी ऐसी ही एक समृद्ध धरोहर है जो बौद्ध धर्म के दर्शन व धार्मिक कला की प्रतीक है और दर्शकों, शोधकर्ताओं व इतिहास प्रेमियों को भारतोय संस्कृति के उस कालखण्ड के अनुशीलन हेतु प्रेरित करती हैं और निरन्तर करती रहेगी।

गांधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन
(सन्दर्भ–राजकीय संग्रहालय चण्डीगढ़)

विषय–प्रवेश

भूमिका

प्रथम अध्याय– गांधार शैली का ऐतिहासिक परिचय

1.1 गांधार शैली की उत्पत्ति एवं विकास

1.2 गांधार शैली का भौगोलिक विस्तार

1.3 गांधार शैली की सांस्कृतिक व धार्मिक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय– राजकीय संग्रहालय चण्डीगढ़ में संग्रहीत गांधार मूर्तिशिल्प में बुद्ध व बोधिसत्व रूप

2.1 बुद्ध शीर्ष

2.2 आसन बुद्ध प्रतिमायें

2.3 स्थानक बुद्ध प्रतिमायें

2.4 शयन बुद्ध प्रतिमायें

तृतीय अध्याय– राजकीय संग्रहालय चण्डीगढ़ के गांधार संग्रह में जातक व अन्य मूर्तिशिल्प

3.1 जातक कथा मूर्तिशिल्प

3.2 सिद्धार्थ जीवन सम्बन्धी मूर्तिशिल्प

3.3 अन्य मूर्तिशिल्प

चतुर्थ अध्याय– शिल्प शास्त्रों के आधार पर गांधार मूर्तिशिल्पों का विश्लेषण

4.1 प्रतिमा तालमान

4.2 प्रतिमा वर्ण एवं माध्यम

4.3 हस्त मुद्रा, पादमुद्रा व आसन

4.4 शरीर मुद्रा

4.5 अलंकरण

4.6 परिकर

पंचम् अध्याय– गांधार मूर्तिशिल्प एवं मथुरा मूर्तिशिल्प का तुलनात्मक अध्ययन

उपसंहार

परिशिष्ट– संदर्भ ग्रन्थ सूची

BIBLIOGRAPHY

INTERNET WEBSITE

पत्र–पत्रिकायें

मानचित्र

चित्र सूची

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिकाके अन्तर्गत मैं गांधार शैली व राजकीय संगहालय, चण्डीगढ़ का सिंहावलोकन प्रस्तुत करूँगी।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत मैं गांधार शैली की उत्पत्ति एवं विकास तथा उसकी ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक व धार्मिक पृष्ठभूमि का विवेचन करूँगी।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत मैं राजकीय संग्रहालय, चण्डोगढ़ में संग्रहीत गांधार मूर्तिशिल्प में बुद्ध व बोधिसत्व रूपों का अध्ययन करूँगी।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत मैं राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़ के गांधार संग्रह में जातक, सिद्धार्थ जीवन सम्बन्धी व अन्य मूर्तिशिल्पों का विवेचन करूँगी।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत मैं शिल्प शास्त्रों के आधार पर गान्धार मूतिशिल्प का विश्लेषण करूँगी।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत मैं गान्धार मूर्तिशिल्प एवं मथुरा मूर्तिशिल्प का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

उपसंहारके अन्तर्गत मैं गान्धार मूर्तिशिल्प की प्रमाणिक भारतीयता एवं प्राचीन धरोहर के रूप में उसकी सजीवता व सौन्दर्यात्मकता को राजकीय संग्रहालय चण्डीगढ़ के सन्दर्भ में सिद्ध करूँगी।

दिनांक

रुबी राठौर
शोधार्थी छात्रा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1	अग्रवाल, वासुदेवशरण,	भारतोय कला, पृथ्वी प्रकाशन वाराणसी, 1966
2	उपाध्याय, वासुदेव,	प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, प्रकाशन चैखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1982
3	उपाध्याय, वासुदेव,	भारतीय कला की भूमिका, प्रकाशन नयी दिल्ली, 1980
4	उपाध्याय, शरण भगवत,	भारतीय कला का इतिहास, पीपुल्स पब्लिशिंग हास (प्रा0)लि0नई दिल्ली, 1918
5	कुमारी मालविका, विधावती,	बौद्ध कलाकृतियाँ, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, 1957
6	गुप्ता, सुमन्त,	गुप्त वंशीय अभिलेखों का धार्मिक अध्ययन, चाँदनी महल दरियागंज, नई दिल्ली, 1981
7	चन्द्र, मोती,	प्राचीन भारतीय वेशभूषा, प्रकाशन नयी दिल्ली, 2007
8	चन्द्र पाण्डेय, गोविन्द	बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, हिन्दी समिति सूचना विभाग उ0प्र0 लखनऊ, 1963
9	जोशी,पुरुषोत्तम नील,	पाचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, विहार–राष्ट्र भाषा–परिषद, पटना, 2017
10	दास रायकृष्ण	भारतीय मूर्तिकला, प्रकाशन प्रधानमंत्री नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
11	पवन वीणा	भारतीय मूर्तिकला का इतिहास, ईस्टर्न बुक लिंकर्स बनारस, 1991
12	प्रताप, रीता,	भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
13	सोमपुरा, ओ0 प्रभाशंकर,	भारतीय शिल्पसंहिता, सौमेया पब्लिकेशन प्रा0लि0, बम्बई, नई दिल्ली, 1975

BIBLIOGRAPHY

1 Agrwala,V.N., *'Buddha And Bodhisattva'* In Images In Mathura Museum, Journal Of Uttar Prdesh Historical Sociely,1948

2 Auboyer, J., *'Buddha, A Pictorial History Of His Life And Legacy'*, New Delhi, 1983

3 Burgess, J., *'The Gandhara Sculptures'*, London, 1899

4 Bapat,P.V., *'2500 Years Of Buddhism'*, New Delhi, 1959

5 Burlingame, E.W., *'Buddhist Parables'*, New Delhi, 1922

6 Fingesen, P. *' The Smile Of The Buddha'*, Oriental Art, 1968

7 Ghosh, A., *'Gandhara And Its Art Tradition'*, Calcutta,1978

8 Goswamy, Prem., *'Catalogue Raisonne Og Gandhara Sculpture'*, Chandigarh Museum, 1978

9 Havell, E.B., *'Indian Sculputre And Painting, Publications Ansar*i' New Delhi, 1980.

10 Majumdar,N.G., *'The Graeco-Buddhist School Of Gandhara'*, Archaeologica Survey Of India, New Delhi, 1937

11 Narain,A.K., *' Studies In Buddhist Art'*, New Delhi, 1985

12 Robert,S.E., *'Greek Deities In The Buddhist Art Of India'* ,Oriental Art, 1959

13 Sharma, R.C., *'Buddhist Art Of Mathura'* , New Delhi,1984

14 Shubhda A,Joshi, *'Buddhism In India'*, And Albroad Mumbai ,1996

INTERNET WEBSITES

- www.gktoday.in/gandhara-school-of-art
- https://en.wikipedia.org/wiki/Gandhara
- https://en.wikipedia.org/wiki/Indo-Greek_art
- www.indianetzone.com › ... › Indian Sculpture › Indian Schools of Sculptures
- www.civilserviceindia.com › Subject › History › Study Materia
- .https://selfstudyhistory.com/.../mathura-school-of-arts-gandhara-school-of-arts-and-a..

पत्र–पत्रिकायें

हिन्दी–अंग्रेजी पत्र–पत्रिकायें

- आकारArt Heritage
- आकृति Marg
- कला निधि Roopam
- कला सरोवर Roop Lekha
- गगनांचल
- वैचारिकी हिन्दी

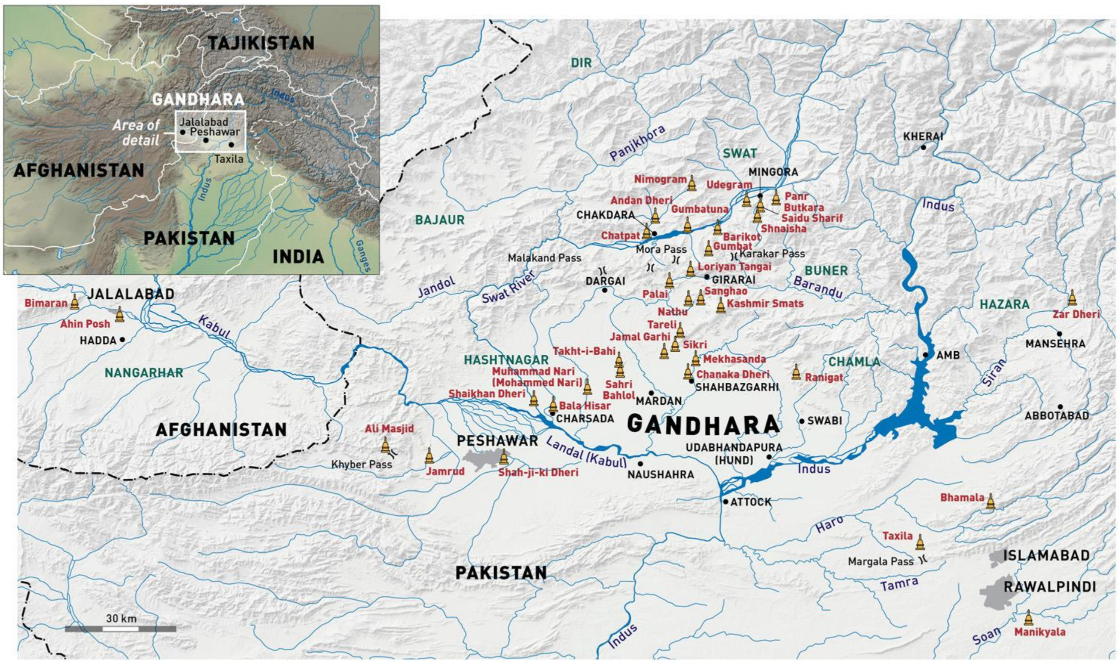

चित्र संख्या 1, शीर्षक–बुद्ध शीर्ष, माध्यम–स्लेटी काला पत्थर,
समय–चतुर्थ शताब्दी ईसवी, संग्रहीत–राजकीय संग्रहालय चण्डीगढ

चित्र संख्या 2,
राजकुमार के रुप में
माध्यम–स्लेटी काला पत्थर
समय– द्वितीय शताब्दी ईसवी
संग्रहीत–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ

चित्र संख्या 3,
शीर्षक–बुध्द स्थानक प्रतिमा
माध्यम–स्लेटी काला पत्थर,
समय– द्वितीय शताब्दी ईसवी
संग्रहीत–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़

चित्र संख्या 4, शीर्षक –बुध्द प्रतिमा पद्मासन मुद्रा, माध्यम–स्लेटी काला पत्थर, समय– द्वितीय शताब्दी ईसवी, संग्रहीत–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ

चित्र संख्या 5, शीर्षक–बुध्द और अन्य देवी–देवता प्रतिमा, माध्यम–स्लेटी काला पत्थर, समय– तृतीय शताब्दी ईसवी, संग्रहीत–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ